नेहरू बाल पुस्तकालय

पूँछ की पूछ

रामेन्द्र कुमार

चित्र
पुलक विश्वास

अनुवाद
पंकज चतुर्वेदी

बहुत पुरानी बात है, जब साँप और नेवले की गहरी दोस्ती थी।
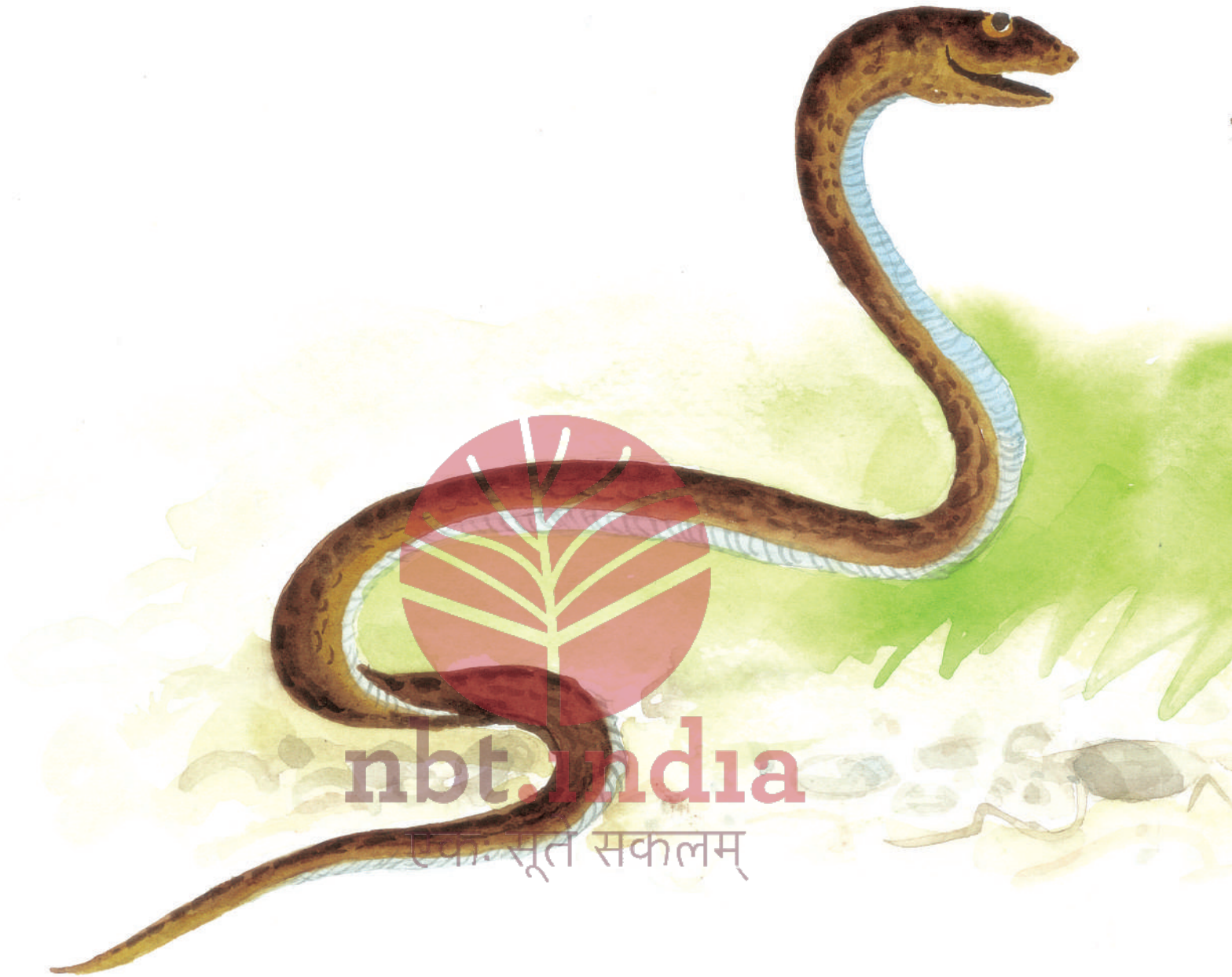
वे साथ-साथ खेलते, शिकार करते और एक साथ खाते थे।
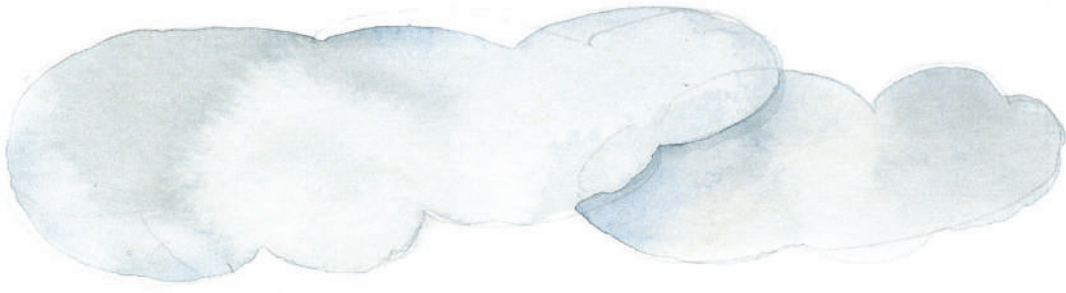
एक दिन उन्हें जानकारी मिली कि पड़ोस के जंगल, जिसका नाम 'पिटारा' था, में एक प्रतियोगिता होने जा रही है। ''सबसे लम्बी पूँछ की प्रतियोगिता''।

साँप ने नेवले से कहा, ‘‘मैं तुम्हारी पूँछ को अपने मुँह में दबा लूँगा सभी को लगेगा कि तुम्हारी पूँछ इतनी लम्बी है। इस तरह हम दोनों मुकाबला जीत लेंगे।’’
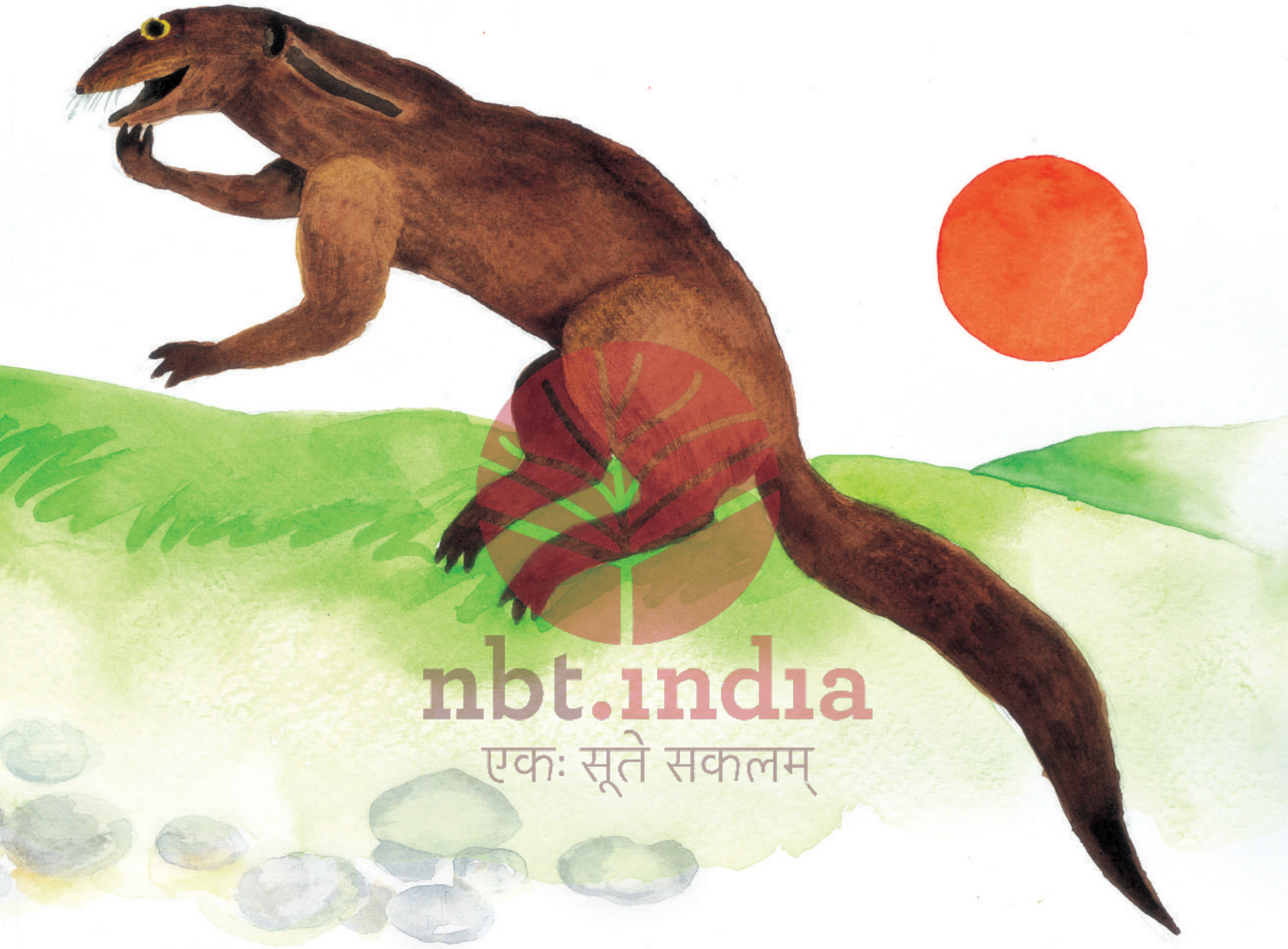
नेवले को भी यह बात ठीक लगी और वे दोनों ‘पिटारा’ पहुँच गए।

सभी प्रतियोगियों को बड़ी सी चट्टान पर बैठाया गया, जिससे उनकी पूँछ नीचे की ओर लटकती रहें।

जंगल का राजा हाथी अपनी सूँड़ को पैमाना बना कर सब की पूँछ को माप रहा था।

अंत में नेवले को विजेता घोषित कर दिया गया। उसकी पूँछ 'चार सूँड' के बराबर थी।

वहाँ पर शानदार भोज की भी व्यवस्था थी। नेवला खाने में ऐसा जुटा कि अपने दोस्त साँप को ही भूल गया। भूखे साँप को गुस्सा आ रहा था। उसने धीरे से खुद को नेवले से अलग कर लिया और भोजन की तलाश में निकल पड़ा।

हाथी की निगाह साँप और नेवले दोनों पर पड़ी गई। उसने उन दोनों को अपनी सूँड़ में लपेटकर बाहर फेंक दिया।

अब साँप और नेवला एक-दूसरे पर आरोप लगाने लगे...
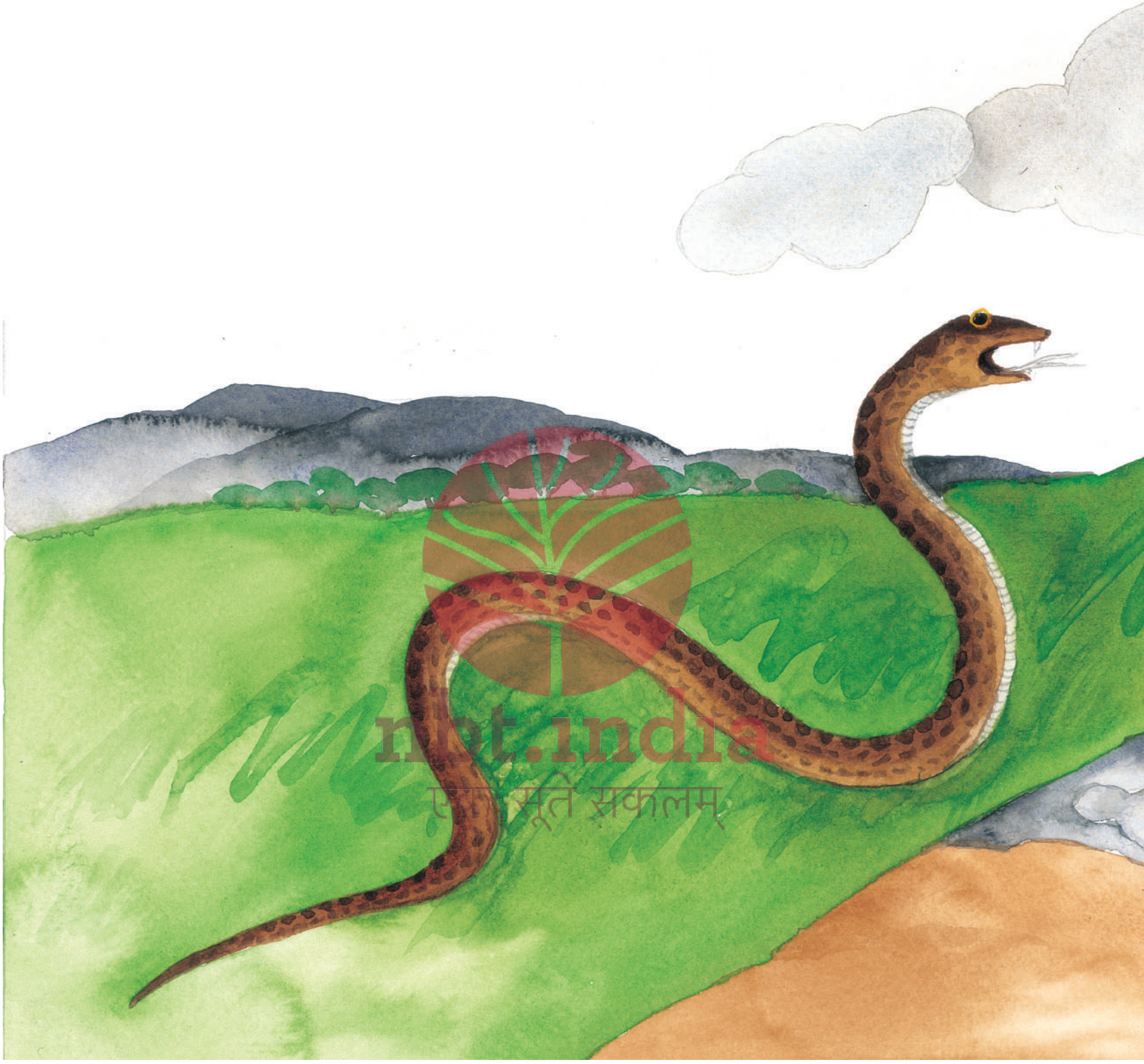
और उनके बीच ज़बरदस्त भिड़ंत हो गई...

और तभी से वे एक-दूसरे के घोर दुश्मन हैं।